अंतरा-शब्दशक्ति

पीर धरा की

काव्य संग्रह

अदिति रूसिया

पीर धरा की

(काव्य संग्रह)

अदिति रूसिया

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-33-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © अदिति रूसिया

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Peer Dhara Ki' by 'Aditi Rusia'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

लेखन की प्रेरणा

पढ़ने का शौक़ तो बचपन से था । बहुत सारी नॉवेल पढ़ीं हैं बचपन में । पापा के साथ हमेशा हम कवि सम्मेलनों में जाया करते थे तो कविता पढ़ना व सुनना अच्छा लगता था । पापा की एक डायरी थी जिसमें ज़फ़र , शकील बदायूनी , शमीम जयपुरी और भी शायरों की शायरियाँ लिखी थीं । पापा को शेरों-शायरी एवं क़व्वाली का बड़ा शौक़ था ।

पापा की डायरी पढ़कर अपने मन से क़रीब ३५-४० शायरियाँ लिखीं । तक़रीबन इतनी ही मेरी कविताएँ भी हैं । 10th -11th में थी तब छत पर पढ़ाई करते हुए बग़ल की छत पर कबूतरों को दाना चुगते देखा मन में ख़्याल आया कविता लिखने का और एक कविता यूँ ही लिख ली शीर्षक दिया बेबस इंसान। इसी तरह कई कविताएँ लिखीं । पहले मैंने एकता के नाम से सारी कविताएँ लिखीं हैं , जो आज भी मेरी डायरी में हैं । मुझे गाना सुनना , गाना और लिखना भी अच्छा लगता है । गानों से कई डायरियाँ भरी पड़ी हैं डाँट भी बहुत खाई अपने इस शौक़ के लिए । सन १९९२ में २० वर्ष की थी शादी हो गई। शादी के बाद सन १९९२ में ही माँ पर एक लेख लिखा । कुछ कविताएँ संजय जी के लिए लिखीं । आख़िरी कविता मैंने १९९३ में अपने बेटे के लिए लिखी जो अब इस दुनियाँ में नहीं हैं । फिर कार्तिक हमारी ज़िंदगी में आया तो लेखन कार्य बंद हो गया । दोनों बच्चों कार्तिक और कावेरी को उच्च शिक्षा देना मेरा उद्देश्य था । मुझे लगता था मैंने पढ़ाई नहीं की पर दोनों बच्चों को अच्छी शिक्षा देना हैं । इसके लिए मुझे काफ़ी संघर्ष भी करना पड़ा । घरवालों के ख़िलाफ़ जाकर दोनों बच्चों को बालाघाट पढ़ने भेजा ।

सब कुछ आसन नहीं था । पर मैंने किया ।दो साल बिस्तर पर पड़ी रही ।२०१२ में घुटने का ऑपरेशन करवाया । काफ़ी लम्बे अरसे के प्रीति ने मुझे दुबारा लिखने के लिए प्रेरित किया ये ४-५ अप्रैल की बात है जब प्रीति ने मुझे अंतरा में जोड़ा और ६ अप्रैल २०१७ को मैंने एक लेख लिखा ख़ुशी पर । संजय जी व बच्चों का भी पूरा सहयोग मिला । प्रीति व संजय जी की प्रेरणा से आज मैंने कई कविताएँ , लघु कथाएँ लेख एवं संस्मरण लिखे। वैसे तो समाजिक कार्यक्रमों में हमेशा बढ़ चढ़ कर भाग लेती आई हूँ और हमेशा सम्मान प्राप्त किया है पर लेखन के क्षेत्र में जो सम्मान मिला उसका सारा श्रेय मेरी प्यारी सखी प्रीति और संजय जी को जाता है क्योंकि दोनों के बिना ये मुक़ाम हासिल कर पाना असंभव था ।

अदिति रूसिया

अनुक्रमणिका

1. पीर धरा की	5
2. दुःख	6
3. लुटेरे	7
4. एक बूँद पानी की क़ीमत	8
5. मौन	9
6. धरती	10
7. पर्यावरण	11
8. रागिनी	12
9. बरसात	13
10.रास्ते	14
11.अंकुरण	15
12.नदी	16

पीर धरा की

पीर धरा अब सह न पाए
रो रो आँखों से नीर बहाए
जहाँ देखो वहाँ हो रहा
नारी पर अत्याचार
मासूम बच्चियों के साथ
हो रहा आए दिन दुराचार
कट रहे हैं देखो हर जगह वृक्ष
सड़कें हो रही चौड़ी
न पथिक को छाया बची
न ठौर बचा पंछी का
जगह जगह सूखा
आकाल पड़ रहा
धरती हो रही प्यासी
कोई न समझ पा रहा देखो
अब भी ये **पीर धरा की**

दुःख

पग पग काँटे बिछे राहों में
डगर भी है मुश्किल ज़रा

हर तरफ़ दुश्मनी पल रही
दोस्ती का हाथ तू बड़ा

ग़म का अंधियारा छाया
सुख का दीपक ख़ुद जला

राह से काँटे अलग कर
राह को आसान बना

जब भी दुःख हो कोई
दूसरों पे ख़ुशियाँ लुटा

ग़रीबों का सहारा बन
अमीरी का घमंड न कर

हो सके जितना भी तुझसे
ज़िंदगी ज़िंदादिली से जीले

चाहे लाख आए दुःख जीवन में
हर घड़ी हर पल मुस्कुरा के जी

काम आएँगे सदा अपने ही
हिल मिल के संग इनके तू रह

लुटेरे

माखनचोर मेरे चितचोर
लूट के ले गए दिल जिगर

सबकी आँखों में बसते हो
मेरे श्याम सुंदर मुरलीधर

बंशी बजा के करते हो
दीवाना सभी को मेरे सरकार

राधा के प्रियतम हो तुम
द्रौपदी के लाज़ बचावनहार

मीरा के तुम गिरधर नागर
कुब्ज़ा के तुम तारणहार

अर्जुन के तुम बने सारथी
तुम सा न कोई ज्ञानी अपार

मेरे तो हो प्रियवर श्याम सलोने
हो तुम मेरे प्राण आधार

एक बूँद पानी की क़ीमत

पानी तेरे रंग अनेक , रूप है अलग अलग

गंगा में जब बहता है
पूजा जाता सबसे

सागर की लहरों में उठता
दे जाता मोती , सीप है

नदियों का बहता पानी
दे जाता सबको जीवन है

धरती पर जब तक
न पड़ती बूँदे पानी की

खेत खलियाँन सूख जाते
पर पड़ते ही बूँदे हरियाली छा जाती

एक एक बूँद पानी की क़ीमत
समझ न पा रहा मानव क्यों

काट रहा हरे भरे जंगल को
सूख रहीं नदियाँ चहू ओर

अब भी संभल जा रे मानव
वनों को न काट नदियों को न पाट

पेड़ पौधे और पानी ही हैं
हर एक जीवन की आस

पानी तेरे रंग अनेक, रूप है अलग अलग

मौन

किया अनुभव जो मैंने अपने जीवन में
आओ सुनाऊँ दास्ताँ जीवन की अपने

हर पल हर दर्द सह जीती हूँ हँस कर
सीख लिया है मैंने दुःख में सुख को पाना

जीना है तो हँस कर जीयो क्या रोना गाना
जीवन में ख़ुशियाँ भर ख़ुशबू लुटाना सीखो

गुलाब काँटों में खिलकर महकाता सारी बगिया
तुम भी काँटों में रह ख़ुशियों को पाना सीखो

दर्द को परे रख ख़ुशी से जीना सीखो
जितनी ज़रूरत हो उतना बोलो

कभी कभी मौन रहना भी अच्छा होता
पर बुराई के ख़िलाफ़ बोलना सीखो सीखो,..

धरती

धरती पर हमारा जन्म हुआ
हम धरती माँ के बच्चे हैं

धरती पर जो फ़सल उगे
हम उसको ही खाते हैं

धरती का ग़हना होते वृक्ष
हम उन्हें क्यों फिर देते काट

धरती से पेड़ जब काटे जाते हैं
मैं दुखी तब हो जाती हूँ

धरती माँ तो प्यारी प्यारी हैं
देती हरे भरे खेत और हरियाली हैं

धरती का तुम मान करो
जीवन न उनका तुम नष्ट करो

धरती पर तुम वृक्ष लगाओ
माँ का मान बढ़ाओ तुम

आओ सूखी बंजर होती ज़मीन पर
हरियाली लाने संकल्प करें हमतुम

अब न रहे कभी ये धरती प्यासी
कलकल नदियाँ बहें चहूँ ओर

धरती सुनहरी अंबर नीला हो सारा
बीच में हम सब एकता के सूत्र में बँधे हों,...

पर्यावरण

कट रहे वृक्ष सारे रो रही आज धरा
हो रहा पर्यावरण प्रदूषित आज सारा

बदल रहा परिवेश इंसा बदल रहा
मौत को हाथ ले इंसा जी रहा

जहाँ कभी छाई होती थी हरियाली
आज खड़ी हँस रही इमारतें निराली

कभी खेलते थे बच्चे बाग़ बगीचों में
आज टी वी देखते बैठे है घर के कोने में

कभी पड़ते थे झूले अमवा की डालों में
आज झूलते हैं महल अटारो में

बहती थीं नदियाँ कलकल करती
आज सूखी पड़ी हैं पथरीली राहों में

सुन मानव तू चित्कार धरा की
कर न तू संहार प्रकृति का कर मान

जिसने दिया अन्न का दाना
उसका न मान कभी घटाना

पर्यावरण किया है दूषित तूने ही
अब प्रकृति को निर्मल तुझे ही बनाना है,..

रागिनी

आज राग -रागिनी चहक रहीं हैं
अवनि और अंबर तल पर
लिया संकल्प जो मैंने है
न होने दूँगी दूषित नदियों को
और
धरा को सदा ही हरित रखूँगी
न खोने दूँगी हरियाली इसकी
हर जगह अंकुरित होंगे पौधे
कलकल नदियाँ बहेंगी फिर

बड़ी बड़ी इमारतें भी होंगी
पर न प्रदूषित होगी धरा
चारों ओर होंगे वृक्ष हरे भरे
होगा पंछी का कलरव भी
और
झूम झूम कर नाचेंगे मोर पपीहे
कोयल की कूँ कूँ से गुंजित धरा होगी
होंगे कानन सभी सुरक्षित होंगे सारे जीव जंतु
मिल छेड़ेंगे फिर राग रागिनी झूमते नाचते संग,..

बरसात

आज जमकर हुई बरसात
ख़ुश हुई धरती सारी आज
प्यास बुझी है धरती की
महीनों से थी जो प्यासी

नाच उठा वन में मयूर भी
मिल मोरनी के फिर साथ
झूम रही अमवा की डाली
कूँक रही कोयल काली

इन्द्रधनुषी छटा बिखेरे
ख़ुश है अंबर भी आज
खेत और खलियान ख़ुश हैं
और ख़ुश है आज किसान

कल कल करती नदियाँ ख़ुश हैं
ख़ुश है सारा जहान
समुद्र भी है आज ख़ुश
मिलने को नदियों से आज

प्यास बुझी है आस जगी है
जीवन की बगिया महकी
धरती पे जो रोपा था पौधा
पल्लवित हुआ है आज,...

रास्ते

रास्ते बहुत कठिन हैं मंज़िल भी दूर
रहने को ठौर नहीं जाऊँ किस ओर

तपती धूप है छाया नहीं कहीं
प्यास लगी है ज़ोरों की पीने को पानी नहीं

काट दिए हैं वृक्ष रास्तों के सारे
पाट दीं हैं नदियाँ सारी बहती थीं जो कलकल

आज पथिक बैठा है धूप में प्यास से व्याकुल
तन गईं हैं इमारतें सड़कें हुईं चौड़ी

कभी आम के वृक्ष देते थे छाया पथिक को
रो रहें हैं आज पड़े सड़कों के किनारे

सूखी नदियाँ बह रहीं पथरीली राहों में आज
रो रही सह रही चोट पत्थरों की आज

व्यथित है मन आज बहुत जाऊँ किस ओर
चारों तरफ़ सूखा पड़ा हरियाली नहीं किसी ओर,...

अंकुरण

प्यार का अंकुरण हुआ
तुमसे ही मिलकर
धन्य हुई मैं पाकर तुम्हें
तुम जैसा गर साथी हो तो
जीवन बन जाता मधुबन
न किसी बात की फ़िक्र
न किसी बात का ग़म
लगता हर दिन पावन
कितनी भी कठिन डगर हो
काँटे हो चाहे राहों में
चलना न होता मुश्किल
प्यारे प्यारे दो फूल
पल्लवित हुए आँगन में
पाकर तेरा साथ
महक उठी दिल की
बगिया फिर
झूमे नाचे साथ
बरगद से तुम अटल खड़े
जड़ें करी मजबूत तुमने
पीपल सी छांव दी तुमने
बाग़वान तुम बने
तुम सा न कोई दूज़ा
तेरे साथ सदा बना रहे ,...

नदी

चंचल नदी की धारा सी
अविरल तुम बहती जाना
चाहे आए लाख तूफ़ान
फिर भी न तुम डगमगाना

दरिया तो बस बहता है
चाहे डगर हो ऊँची नीची
राह न कभी बदलती उसकी
चलता निशदिन एक समान

उसी तरह तुम आगे बढ़ते जाना
चाहे आए लाख डगर ऊँची नीची
कभी न डर के क़दम पीछे हटाना
गिर के भी संभल आगे बढ़ते जाना,...

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- अदिति रुसिया
जन्म	- 16.04.1972
शिक्षा	- बी.ए. (पं. रविशंकर युनिवर्सिटी)
माता	- श्रीमती मंजुला गुप्ता
पिता	- स्व.श्री सतीशचंद्र गुप्ता
पति	- श्री संजय रुसिया
पुत्र-पुत्री	- कार्तिक एवं कावेरी
कार्यक्षेत्र	- गृहणी
दायित्व	- राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य - मातृभाषा उन्नयन संस्थान। सलाहकार- अंतरा शब्द शक्ति (मासिक वेब पत्रिका)
प्रकाशन	- जीवनी की धुप छांव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा संकलन), वुमन आवाज (नारी से नारी तक), अंतरा शब्द शक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा में अनेक रचनाएं प्रकाशित।
सम्मान	- अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान,
उद्देश्य	- अपने मनोविचारों को लोगों तक पहुँचाना।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-33-9

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com